B.A. Part II (Hons)
Paper – IV

तुलनात्मक राजनीति का विषय-क्षेत्र

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति की भाँति इसका विषय-क्षेत्र भी विवादास्पद है। इस संबंध में विद्वान एकमत नहीं हैं कि राजनीति के किन-किन पक्षों को तुलनात्मक राजनीति के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाए तथा किन वस्तुओं एवं किन पक्षों को इसके विषय-क्षेत्र से बाहर रखा जाए।

तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के सन्दर्भ में राजनीति के तीन पक्षों का संकेत मिलता है – राजनीतिक क्रिया-कलाप, राजनीतिक प्रक्रिया तथा राजनीतिक सत्ता। राजनीतिक क्रिया-कलाप के अन्तर्गत वे प्रयास आते हैं, जिनके द्वारा संघर्ष की स्थितियाँ पैदा की जाती हैं तथा जनहित एवं सत्ता-संघर्ष में भाग लेनेवाले व्यक्तियों के हितों को ध्यान में रखते हुए उनका समाधान किया जाता है। राजनीतिक प्रक्रिया के अन्तर्गत निर्णय लेने की प्रक्रिया तथा उस प्रक्रिया में भाग लेनेवाले समस्त सरकारी एवं गैर-सरकारी अभिकरणों की भूमिका आती है। राजनीति सत्ता भी तुलनात्मक राजनीति का विषय है। समस्त राजनीतिक गतिविधियाँ तथा राजनीतिक एजेंसियाँ सत्ता-संघर्ष में लिप्त हैं। तुलनात्मक राजनीति उन सभी पक्षों एवं पहलुओं का अध्ययन करती है, जो सत्ता-प्राप्ति के लिए संघर्षरत हैं।

तुलनात्मक राजनीति का क्षेत्र दिन-व-दिन विस्तृत होता जा रहा है। आज इसके अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व के देशों की शासन-व्यवस्थाओं किया जा रहा है। तुलनात्मक राजनीति के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों का अध्ययन किया जाता है–

(क) पश्चिमी, गैर-पश्चिमी तथा साम्यवादी देशों की संस्थाओं का तुलनात्मक विश्लेषण।

(ख) राजनीतिक संरचनाओं के साथ-साथ ~~सा~~ गैर-राजनीतिक संरचनाओं और उनके प्रभावों का अध्ययन।

(ग) मानव-स्वभाव, व्यवहार तथा वाह्य परिस्थितियों का अध्ययन।

(घ) राजनीतिक पद्धतियों के आधारों एवं मान्यताओं का मूल्यांकन।

कई विद्वान लेखकों ने तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन-क्षेत्र के अन्तर्गत संविधान, हित-समूह, राजनीतिक दल, कार्यपालिका, विधायिका तथा विधायी व्यवहार, निर्वाचन एवं मत-व्यवहार, कानूनी पद्धतियाँ, लोक प्रशासन तथा राजनीतिक परिवर्तन एवं आधुनिकीकरण को समाविष्ट किया है। मैक्रिडीस एवं वार्ड

के अनुसार तुलनात्मक राजनीति के अन्तर्गत दो मुख्य बातें आती हैं— प्रथम, व्यवस्था का विश्लेषण तथा अध्ययन। द्वितीय शासकीय कृत्यों का वर्णन एवं स्पष्टीकरण। ये दोनों एक-दूसरे से संबद्ध हैं। व्यवस्था से अभिप्राय उन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक कारकों से है, जिनके अंतर्गत सरकार कार्य करती है। शासकीय कार्यों से तात्पर्य उन विशिष्ट राजनीतिक संस्थाओं तथा संरचनाओं से जिनके द्वारा निर्णय लिए जाते हैं और उन्हें क्रियान्वित भी किया जाता है। इसमें विशेष रूप से दल, विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा असैनिक सेवा को सम्मिलित करते हैं।

तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के सम्बन्ध में दो प्रमुख उपागम हैं— (i) कानूनी या संस्थागत उपागम (ii) व्यवहारवादी उपागम। संस्थागत या कानूनी उपागम के अनुसार तुलनात्मक राजनीति में केवल संविधान द्वारा स्थापित सरकारी संरचनाओं तथा संविधान द्वारा नियत किए गए राजनीतिक व्यवहारों का ही तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।

व्यवहारवादी उपागम के प्रतिपादकों के मतानुसार, तुलनात्मक राजनीति का संस्थागत उपागम अध्ययन-क्षेत्र की दृष्टि से अपर्याप्त एवं संकुचित है। व्यवहारवादी उपागम के अनुसार, तुलनात्मक राजनीति में राष्ट्रीय संस्थाओं एवं गैर-राष्ट्रीय संस्थाओं और निकायों के राजनीतिक व्यवहार से सम्बद्ध समस्त तथ्यों को इकट्ठा कर विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के सन्दर्भ में तुलना करनी चाहिए जिससे राजनीतिक व्यवस्था की गत्यात्मकता को सही सन्दर्भों में समझा जा सके। डेविड ईस्टन के कथनानुसार, "राजनीति शास्त्र समाज में मूल्यों के अधिकृत वितरणों से संबद्ध ज्ञान है।" तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में उन प्रणालियों एवं पद्धतियों का जिनसे समाज में मूल्यों का अधिकृत वितरण होता है, परीक्षण किया जाता है।

निष्कर्ष: तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र के सम्बन्ध में सिड्नी वर्बा का विचार सही प्रतीत होता है कि केवल वर्णन से आगे बढ़कर सैद्धांतिक दृष्टि से अधिक संगत समस्याओं का अध्ययन हो, सरकार की औपचारिक संस्थाओं से आगे बढ़कर राजनीतिक प्रक्रियाओं एवं राजनीतिक कार्यों का अध्ययन हो तथा केवल पश्चिमी यूरोपीय देशों का अध्ययन न करके एशिया, अफ्रीका एवं लैटिन अमेरिका के नवोदित राष्ट्रों का अध्ययन हो।

— x —